प्रथम अध्याय

कबीर का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

कबीर :- व्यक्तित्व एवं कृतित्व :-

मध्यकाल के अन्य अनेक संत और भक्त कवियों के समान कबीर का जीवन वृत्त भी प्राय: अंधकारमय है। उनके जन्म, जन्मतिथि, मृत्यु, निवास-स्थान, वंश और यहाँ तक कि यथार्थ नाम के सम्बन्ध में असंदिग्ध रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता। फिर भी कबीर हिंदी साहित्य के श्रेष्ठतम अलौकिक शक्तिपुंज है। वह वाणी के उन वरद पुत्रों में हैं, जिनकी प्रतिभा के प्रकाश से हिंदी साहित्याकाश सदा आलोकित रहेगा। कबीर मध्ययुग के श्रेष्ठ कवियों में से हैं इसके अतिरिक्त वे एक अच्छे समाजशास्त्री भी हैं। कबीर एक क्रान्तिद्रष्टा हैं। आज की क्रान्तियाँ उनसे प्रेरणा ले सकती हैं। वे मानवता वादी थे। विश्व-जीवन के लिए वे आज भी मंगलाकांक्षी हैं। यद्यपि कबीर भक्तिकालीन कवि हैं और उन्होंने निर्गुण भक्ति का महत्व अपने काव्य के माध्यम से प्रतिपादित किया है फिर भी उनका समस्त काव्य उनकी सामाजिक प्रतिबद्धता को ही व्यक्त करता है। कबीर की काव्य-रचना का स्त्रोत समाज से जुड़ा हुआ है। तत्कालीन समाज की विकृतियों, अंधविश्वासों एवं रुढ़ियों पर कुठाराघात करने का सशक्त और सफल प्रयास कबीर ने किया है। इसीलिए तो आपको समाज-सुधारक के रूप में भी पहचाना जाता है।

ऐसे समाज-सुधारक भक्त कवि के काव्य में प्रतिबिम्बित विद्रोही भाव को ढूँढने के पहले उनके जीवन एवं कार्य के बारे में सामान्य जानकारी प्राप्त करना आवश्यक है।

1. <u>जन्म</u> :-

कबीर की जन्मतिथि और जन्मस्थान के बारे में विद्वानों में अनेक मतमतान्तर हैं। अत: हम यहाँ कुछ महत्त्वपूर्ण विद्वानों के विचारों को अवलोकित करते हुए कबीर का जन्म, जन्मस्थान, जाति, शिक्षा-दीक्षा आदि के बारे में कुछ ठोस निष्कर्ष तक पहुँचने का प्रयास करेंगे।

अ] <u>जन्मतिथि</u> :-

कबीर-पंथियों ने उनका जन्म संवत् 1455 माना है। कबीर ग्रंथावली में 1455 वि. ज्येष्ठ सुदी पुर्णिमा सोमवार को उनकी जन्मतिथि स्वीकार की गई है, जिसका आधार निम्न दोहा है -

" चौदह सौ पचपन साल गए चन्द्रवार इक ठाट गए ।
जेठ सुदी बरसात को पूरन मांसी प्रगट भए ।। " (1)

उपर्युक्त दोहा कबीर के प्रधान शिष्य धार्मदास का है, जिसके अनुसार यह जन्मतिथि स्वीकार की गई है। इसके अतिरिक्त ' युग पुरुष कबीर ' किताब में डॉ. रामलाल वर्मा और डॉ. रामचंद्र वर्मा ने लिखा है - " डॉ. माताप्रसाद गुप्त ने श्री. एस. आर. पिल्ले की ' इण्डियन क्रोनोलाजी ' के आधार पर गणित करके यह स्पष्ट कर दिया है कि सं. 1455 की ज्येष्ठ पूर्णिमा को सोमवार ही पडता है जब कि 1456 की ज्येष्ठ पूर्णिमा को तो मंगलवार पडता है। "

अत: उपर्युक्त विवेचन के आधार पर यह विश्वास किया जा सकता है कि कबीर का जन्म सं. 1455 में हुआ था ।

आ] जन्म-स्थान :-

कबीर के जन्म-स्थान के सम्बन्ध में भी अनेक मत प्रचलित हैं, इस कारण कबीर का जन्म-स्थान निश्चित करना अत्यन्त कठिन है। अनेक विद्वानों ने जन्म-स्थान के बारे में अपना-अपना मत प्रकट किया है। डॉ. श्याम सुंदर दासजी ने कुछ अन्त:साक्ष्य के आधार पर उनका जन्म-स्थान 'काशी' स्वीकार किया है।

डॉ. गोविंन्द त्रिगुणायत और डॉ. रामकुमार वर्मा ने कबीर का जन्म-स्थान 'मगहर' माना है।

" कबीर जी के दो शिष्य धनी धर्मदास और गरीब दास ने भी कबीर को काशी वासी ही स्वीकार किया है। " (3)

इसके अतिरिक्त निम्न उक्ति से स्पष्ट होता है कि कबीर का जन्म काशी में हुआ था -

" काशी में हम प्रकट भये है रामानंद चेताये।।" (4)

इसी को आधार मानकर डॉ. बडथ्वाल ने लिखा है -

" इससे जान पडता है कि काशी में बसने के पहले वह केवल मगहर में रहते ही नहीं थे वही उन्हें पहले-पहल परमात्मा का दर्शन भी प्राप्त हुआ था। अधिक संभव यह है कि कबीर का जन्म में ही हुआ हो, जो आज भी प्रधानतया जुलाहों की बस्ती है। " (5) लेकिन मगहर जुलाहों की बस्ती होने कारण वहाँ कबीर का जन्म हुआ, कहना तर्कसंगत नहीं लगता। उपर्युक्त आधारों में से हमे तो स्वयं कबीर का कथन ही ठोस आधार मानना पडेगा। अत: स्पष्ट है कि कबीर का जन्म काशी में हुआ था ।

इ] मृत्यु :-

कबीर की मृत्यु संवत् 1575 में मानी जाती है । बाबू श्यामसुंदर दास ने यही माना है। इसका आधार निम्नलिखित है -

" संवत् पंद्रह सौ पछतरा, कियो मगहर को गवन ।
माघ सुदी एकादसी रलो पवन मे पवन ।।" (6)

इस दोहे से यही सिध्द होता है कि कबीर की मृत्यु संवत1575 में मगहर में हुई थी।

2. नाम :-

कबीर के नाम के सम्बन्ध में अनेक जनश्रुतियाँ प्रसिद्ध हैं - कबीरा का जन्म विधवा ब्राह्मणी के हाथ के अँगुठे से हुआ था, इस कारण उन्हें करवीर या कबीर कहा जाने लगा।

दूसरी किवदन्ती भी इस प्रकार है - कहते हैं कि कबीर के नामकरण के अवसरपर काजी ने जब नाम निश्चितिकरण के लिए कुरान खोली तो सबसे पहले कबीर शब्द दिखाई पड़ा। इसलिए उसने उनका नाम कबीर रख दिया। उनका यह नाम पूर्ण सार्थक भी था। कारण अरबी भाषा में कबीर शब्द का अर्थ 'महान' होता है। यह नाम प्राय: ईश्वर के विशेषण के रूप में ही प्रयुक्त होता है। इनके नाम के बारें में निम्न दोहा बहुत प्रसिध्द है -

" कबीरा तू ही कबीरू तू तोरो नाम कबीर ।
राम रतन तब पाइअै जड पहिले लजहि शरीर।।" (7)

3. जाति :-

कबीर की जाति के बारे में विद्वानों में पर्याप्त मतभेद है। कबीर अपनी रचनाओं में अपने आप को 'जोलाहा' और 'कोरी' जाति के मानते हैं। जुलाहे मुसलमान होते हैं और कोरी हिन्दु। तो प्रश्न यह निर्माण होता है कि कबीर ने अपने आप को जुलाहा और कोरी दोनों कैसे कहा ? इस प्रश्न का तर्कयुक्त उत्तर देते हुए डॉ. बडथ्वाल ने कहा है कि - " संभव है जुलाहा कहने से उनका अभिप्राय केवल पेशे से हो, उनके धार्म का कोई उसमें संकेत न हो। जनश्रुति के अनुसार वे जन्म से हिन्दु थे किंतु पालन मुसलमान के घर में हुआ था परन्तु इस बात का प्रमाण मिलता है कि वस्तुत: उनका जन्म मुसलमान के परिवार में हुआ था। " (8)

कबीर पन्थियों का कहना है कि स्वामी रामानंद के आशीर्वाद से विधवा ब्राह्मणी का पुत्रवति होना असंगत और अवैज्ञानिक है। कबीर पन्थियों ने तो उन्हें दिव्य पुरुष परमात्मा का अवतार ठहराया है।

कबीर ने अपने बारे में जुलाहा ही कहा है -

" तू ब्राहमण मै काशी का जुलाहा ।" (9)

डॉ. पारसनाथ तिवारी ने इस संदर्भ में विस्तृत विवेचन द्वारा जो निष्कर्ष निकाला है वही हमें तर्कसंगत और स्वीकार्य लगता हैं। उनके मतानुसार- " कबीर की वाणियों में बौद्ध, हिन्दु और इस्लाम धर्मों की विचारधारा के प्रमाण दिख पडते हैं। कबीर के परिवार वाले नए-नए मुसलमान बने थे, किन्तु संस्कार उनके बौद्ध धर्म के ही थे, अत: वे हिन्दुओं तथा मुसलमानों की अनेक धार्मिक भावनाओं पर आघात करते थे। संक्षेप में कहा जा सकता है कि कबीर की जाति कोरी थी जो प्राचीन कोलिय जाति से सम्बन्ध थी और जिसे जुलाहा नाम से भी पुकारा जाता था। इसलिए कबीर ने अपने को ' जुलाहा ' और ' कोरी ' कहा है तथा इनमें भेद नहीं माना है।" (10)

4. <u>माता - पिता</u> :-

कबीर जुलाहा जाति के थे। कबीर का पालन-पोषण मुसलमान जुलाहा निरु और निमा ने किया था। पालन - पोषण करने के कारण 'नीरु और नीमा 'ही इनके माता-पिता कहलाए। कबीर अपने तीर्थाटन में अधिकतर हिन्दु धर्म वालों से सम्बन्ध रखते थे और उनका झुकाव हिन्दु धर्म की ओर अधिक था। इसका कारण यह भी हो सकता है कि वह हिन्दु और मुसलमान धर्म के बींच की बहुत बड़ी दीवार को मिटाना चाहते थे, और जाति-पाँति की दीवार को धराशाही करना चाहते थे।

कुछ लोग मानते हैं कि उनका जन्म विधवा ब्राह्मणी के गर्भ से रामानंद के आशीर्वाद से हुआ और नीरू-नीमा द्वारा वे पाले-पोसे गए थे।

कबीर के माता-पिता के बारे में विद्वानों में मतभेद हैं। अनुसंधाता भी कबीर के माता-पिता के बारे में अब आज तक इस बात का प्रमाण नहीं दे पाए हैं कि उनके असली माता-पिता कौन थे। जब तक अन्य तथ्य सामने नहीं आते हैं तब तक हमे तो नीरु और नीमा को ही कबीर के भाग्यशाली

माता और पिता मानना पडेगा।

5. गुरु :-

कबीर के गुरु कौन थे ? उनका नाम क्या था ? आदि प्रश्न अन्य प्रश्नों की तरह ही जटिल है। इस सम्बन्ध में अनेकों मत हैं।

मालकम वेस्ट-कॉट और डॉ. आर. एस. त्रिपाठी कबीर के गुरु •शेख तकी• था ऐसा मानते हैं।

रामानंद को कबीर का गुरु मानने के सम्बन्ध में डॉ. रामकुमार वर्मा का कथन है -

" कबीर बचपन से ही धार्म की ओर आकर्षित थे। वे भजन गाया करते थे और लोगों को उपदेश दिया करते थे, पर निगुरा होने के कारण लोगों में आदर के पात्र नहीं थे और उनके भजनों और उपदेशों को भी कोई सुनना पसन्द नहीं करता था। इस कारण वे अपना गुरु खोजने की चिन्ता में व्यस्त हुए। उस समय काशी में रामानंद की बड़ी प्रसिद्धी थी। कबीर उन्हीं के पास गए, पर कबीर के मुसलमान होने के कारण उन्होंने उन्हें अपना शिष्य बनाना स्वीकार नहीं किया। वे हताश तो बहुत हुए पर उन्होंने एक चाल चली। प्रात:काल अँधेरे में ही रामानंद पंचगंगा घाट पर नित्य स्नान करने के लिए जाते थे। कबीर पहले से ही उनके रास्ते में घाट की सीढियों पर लेटे रहे। रामानंद जैसे ही स्नानार्थ आए, वैसे ही उनके पैर की ठोकर कबीर के सिर में लगी। ठोकर लगने के साथ ही रामानंद के मुख से पश्चाताप के रूपमें राम शब्द निकल पडा। कबीर ने उसी समय उनके पैर पकड़कर कहा, महाराज आज से आपने मुझे राम नाम से दीक्षित कर अपना शिष्य बना लिया। उसी समय से कबीर रामानंद के शिष्य कहलाने लगे। " (11)

" ' काशी में हम प्रकट भये है रामानंद चेताए। '

कबीर का यह वाक्य इस बात के प्रमाण में प्रस्तुत किया जाता है कि रामानंदजी उनके गुरु थे। " (12)

रामानंद के सम्बन्ध के बारें में भी यही कहा जा सकता है। कबीर इतना ही कहते हैं - मेरे गुरु बनारस में हैं। रामानंद के उपदेश और

कबीर बाणी में बहुत ही समानता है। 'दबिस्तान-ई-तवारिख' के लेखक मोहसान फानी और 'भक्त - माल' के रचियता नाभादास और उसके टीकाकार प्रियादास के अनुसार स्वामी रामानंद कबीर के गुरु थे। आचार्य डॉ. हजारीप्रसादजी और बडथ्वाल आदि भी इसी मत के पक्ष में हैं।

6. <u>शिक्षा - दीक्षा</u> :-

कबीर ने कई स्थानों पर इस प्रकार के कथन किए हैं, जिससे यह प्रकट होता है कि कबीर निरक्षर थे, उन्होंने इस बात को नि:संकोच रूप से स्वीकार भी किया है।

" मसि कागज छूवों नहीं, कलम गहो नहिं हाथ।
चारिउ जुग के महात्मा, कबीर मुखाही जनाई बात।। " (13)

इस कथन के आधारपर कबीर को बिना पढ़े - लिखो एवं अशिक्षित कहा जाने लगा। परन्तु सोचने की बात यह हैं कि यदि वह सर्वथा अपढ़ या निरक्षर थे, तो काव्य, साहित्य, धर्म, दर्शन, साधना, योग आदि का विभिन्न विषयक प्रतिभा का परिचय वह किस प्रकार दे सके ?

हमारा विचार है कि उन दिनों आज की तरह गली-गली में न तो स्कूल थे और न निर्धनोंको वजीफे आदि की शिक्षा सम्बन्धी इतनी सुविधाएँ ही प्राप्त थी। परन्तु अपने प्रयत्न से कबीर ने विद्यार्जन आवश्य किया था । साधु - संगति तथा गुरु रामानंदजी की सेवा द्वारा उन्होंने विपुल ज्ञानार्जन किया था तथा शास्त्रों का अध्ययन भी किया था। वह अशिक्षित तो थे, परन्तु अन्दर से महान तत्वज्ञानी थे। इन्हीं कारणों से वह मध्ययुग के दार्शनिक थे। इसके साथ वह सामाजिक उपदेशक भी थे। उन्होंने गुरु से तत्त्व ग्रहण करने की बात बार-बार कही है। ज्ञान की प्राप्ति करके और रामनाम की दीक्षा लेकर ही कबीर लोक-कल्याणकारी काव्य प्रणयन में प्रवृत्त हुए थे।

7. <u>व्यवसाय</u> :-

कबीर जाति के जुलाहे थे। जुलाहे सदैव से ही वयनजीवी रहे हैं।

कबीर भी कपडे बुनने का व्यवसाय करते थे। और यह कार्य उन्होंने जन्मभर किया था।

" हम घर सूत तनहिं नित ताना। " (14)

लेकिन बाद में इस पिता के व्यवसाय में मन नहीं रमता था इस कारण वस्त्र बुनने के व्यवसाय को त्यागने का निर्देश मिलता है।

" तनना बुनना सभु तज्यो है कबीर ।
हरि का नाम लिखि लियो सरीर।। " (15)

कबीर सूत और वस्त्र का व्यापार करते थे ऐसा अनेक कई पदों से स्पष्ट दिखाई देता है। यह एक सत्य-निष्ठा और साहस की बात है कि भक्त और संत कबीर ने अपने व्यवसाय को कभी छोटा नहीं माना। जीवन आर्जन के लिए सत्यनिष्ठा से जो काम किया जाता है, उसमें ऊच-नीच का भेद नहीं होता।

8. <u>विवाह एवं सन्तान</u> :-

कबीर के विवाह - सन्तान आदि के सम्बन्ध में भी मतभेद प्रचलित है। कबीर पन्थियों के अनुसार कबीर अविवाहित थे। लेकिन कबीर संत महात्मा होते हुए भी गृहस्थ थे। उन्होंने वैवाहिक जीवन व्यतीत किया था परंतु उनका यह परिवारिक जीवन बहुत सुखमय नहीं रहा होगा। अपने परिवार के भरण - पोषण की जिम्मेदारी वे उठाते थे, उसके लिए श्रम करते थे। जनश्रुति के आधार पर उनकी पत्नी का नाम 'लोई' था । कुछ विद्वान लोई को कबीर की शिष्या भी मानते है। वह एक बनखण्डी बैरागी की परिपालित कन्या थी। यह ब उस बैरागी को स्नान करते समय लोई में लपेटी और टोकरी में रखी हुई गंगा में बहती हुई मिली थी। 'लोई' का अर्थ एक तह तरह का ऊनी कम्बल जो उत्तर भारत में सर्दियों में ओढ़ने के काम आती है।

'लोई' कहीं से भी मिली हो परन्तु वही कबीर की पत्नी थी। कबीर की एक अन्य पत्नी भी थी, जिसका नाम 'धनिया' था। कभी - कभी उसका 'रामजनिया' यह भी नामोल्लेख पाया जाता है। जैसे कि 'श्री गुरु ग्रंथ साहब' की ये पक्तियाँ उद्धृत हैं -

"मेरी बहुरिया को धानिआ नाऊ ।
लै राखिओ रामजनीआ नाऊ ।। " (16)

ऐसा माना जाता है कि यह स्मवती थी और नर्तकी भी थी।

" कबीर की पत्नी न धनिया थी और न ही उनका किसी वेश्या से कोई सम्बन्ध था। "(17) यह सब बातें गढ़ी गई है जिनका कोई ठोस आधार नहीं हैं।

कहते हैं कि उनके दो संतान थी एक पुत्र और एक पुत्री। पुत्र का नाम कमाल और पुत्री का नाम कमाली था। पुत्री के बारें में तो कबीर ने कुछ नहीं कहा है लेकिन पुत्र कमाल उनके सिद्धांतो का विरोधी था। इसी कारण कबीर ने कहा है -

" बूड़ा बंस कबीर का उपज्यो पूत कमाल।
हरि का सिमरन छाडि कै घर ले आया माल।। " (18)

कुछ लोग 'कमाल' को कबीर शिष्य मानते हैं और 'कमाली' को शेखतकी की बेटी मानते हैं जिसें कबीर ने अपनी बेटी के स्म में पाला था।

निष्कर्ष स्म से ~~हम~~ हम यह कह सकते हैं कि कबीर गृहस्थ-जीवन आवश्य बिताते थे, किन्तु ऐसा कोई प्रमाण नहीं मिलता जिसके आधार पर कहा जा सके, कि उनका विवाह हुआ था और उनकी सन्तान थीं।

कबीर का व्यक्तित्व :-

वैसे देखा जाय तो कवि का व्यक्तित्व युग के परिवेश से निर्मित होता है। कवि - व्यक्तित्व की निर्मिति में उस युग की विचारधाराओं एंवं परिस्थितियों का योगदान महत्वपूर्ण रहता है। व्यक्ति अपनी बुद्धि शक्ति के द्वारा समाज और प्रकृति से बहुत कुछ ग्रहण करता है। औरफ परिस्थिति के अनुसार उसकी विचारधारा में परिवर्तन होता रहता है। कबीर का व्यक्तित्व भी इन बातों से अछूता नहीं है।

अनन्तदास की परिचयी में कबीर के शारीरिक स्म का वर्णन मिलता है कि वे साँवले रंग के बडे सुन्दर स्म वाले थे। वे माला पहनते थे और

तिलक धारण करते थे। उनकी आँखें बडी निर्मल थी। वे प्रिय एवं मधुर वचन बोलनेवाले व्यक्ति थे। अनन्तदास और कबीर दोनों रामानंद के शिष्य बताये जाते हैं। इस कारण कबीर का यह स्मस सही माना जा सकता है।

बुद्धि विचारों की जननी होने के कारण जिसकी बुद्धि जैसी होती है, वैसें उसके विचार होते हैं। बुद्धि का व्यक्तित्त्व से घनिष्ट संबंध है। व्यक्तित्त्व, स्वभावगत शारीरिक एवं मानसिक विशेषाताओं का समष्टि स्वरूप हैं। स्वभाव, शरीर तथा मन आदि का निर्माण कुछ तो पूर्व जन्म के संस्कारों पर और कुछ इस जन्म की परिस्थितियों पर अवलम्बित रहता है।

कबीर की स्वभावगत और मनोगत विशेषताएँ इस प्रकार हैं -

1. <u>श्रमजीवी</u> :-

कबीर श्रमजीवी थे। वे अपनी जीविका स्वयं चलाते थे। वे आत्म-निर्भर व्यक्ति थे। दूसरों की आशा पर वे जीने वाले व्यक्ति नहीं थे। उनके विचार से कर्म करनेवाले व्यक्ति की ही समस्याएँ दूर हो सकती है। जो कर्म नहीं करता उसका पूर्णत: नाश हो जाता है। कबीर के काव्य में इस प्रकार के अनेक पद मिलते हैं, जिनमें मनुष्य को सत्कर्म करने की बात कही गयी हैं। इससे स्पष्ट होता है कि वे एक कर्मशील पुरुष थे और उन्हें सत्कर्म में आस्था थी।

2. <u>मानवतावादी</u> :-

कबीर मानवता के प्रेमी थे। एक तरफ मनुष्य के हितों की बात सोचते-सोचते उनके मन की करुणा अत्यन्त द्रवीभूत हो गयी थी और दूसरी तरफ सामाजिक भ्रष्टाचारों एवं धार्मिक पाखण्डों को देख कर उनका मन तिलमिला उठा था, इन्हीं दोनों भावों के प्रकाश में उनका काव्य लिखा गया। उनका सारा काव्य सामाजिक चेतना को उभारने-वाला है। वे काम न करने वाले व्यक्ति को काम करने की प्रेरणा देते हैं और सोने वाले को जागृत करते हैं। उनका कहना था कि कर्म करने वाले को कभी-न-कभी सफलता अवश्य मिलती हैं।

3. <u>क्रान्तिकारी</u> :-

कबीर क्रान्तिकारी के रूपमें अंत तक कार्य मग्न रहे। वे दिलो दिमाग से स्वतंत्र थे। कोई बंधन उनपर नहीं था। बडा, उच्च, पुराना, आर्ष, शास्त्र सम्मत परम्परा का उनके लिए कोई महत्त्व नहीं था। उन्हें महत्व केवल 'सत्य' का था, सच्चे अर्थों में वे सत्यान्वेषी थे। कबीर यह सहन नहीं कर पाते थे कि मन्दिर में शूद्र लोग नहीं जा सकते। कबीर ने ब्राह्मणवाद के व्यापक प्रभाव को स्पष्ट कर दिया था। ब्राह्मणों के कारण ही समाज में छुआछूत है, यह उन्होंने अच्छी तरह से जान लिया था। इसलिए वे ब्राह्मणों को बार-बार ललकारते थे।

कबीर पाखण्डवाद के सख्त विरोधी थे। वे मुसलमानों की नमाज पढ़ने की पद्धति के खिलाफ थे। उन्हें यह स्वीकार नहीं था कि खुदा की प्रार्थना चिल्ला - चिल्ला कर की जाए। जब खुदा या ईश्वर सर्वत्र है, तब उसके लिए चिल्ला कर प्रार्थना करने का क्या मतलब है? मुर्गे की तरह बांग देने की क्या जरूरत है।

हिन्दुओं की मूर्ति - पूजा आदि का विरोध किया था। समाज में व्याप्त दुराचार, पाखण्ड, छल-कपट, अंधविश्वास और रूढ़ियों का जितना तीव्र विरोध कबीर ने किया, वैसा न तो उनसे पहले कोई कर सका था और उनके बाद न ही किसी ने किया है। विरोध के लिए सच्चे और सदाचारी व्यक्ति की आवश्यकता होती है। कबीर को अपने आचरण और मर्यादा पर पूरा विश्वास था, इसीलिए वे इतने साहसपूर्वक, निर्भीकता से सभी प्रकार के सामाजिक और धार्मिक पाखण्डों पर तीक्ष्ण प्रहार कर सके हैं। इससे उनका एक प्रखर, तेजस्वी, स्पष्ट वक्ता, निराभिमानी, साहसी और निर्भिक सुधारक का रूप ही उभरता है। इस प्रखर और तेजस्वी रूप में उनके व्यक्तित्त्व की चोट करने वाली योद्धा की मूर्ति भी सामने आती है।

4. <u>फक्कड स्वभावी</u> :-

कबीर फक्कड स्वभाव के होने कारण अच्छा हो या बुरा, खरा हो या खोटा, जिससे एक बार चिपक गये तो उससे जिन्दगी भर चिपके रहे,

यह सिध्दांत उन्हें बिल्कुल मान्य नहीं था। वह सत्य के जिज्ञासु, उपासक थे और कोई मोह-ममता उन्हें अपने मार्ग से विचलित नहीं कर सकती थी। वह अपना घर जलाकर हाथ में मुराड़ा लेकर निकल पड़े थे। और उसी को अपना साथी बनाने को तैयार थे जो उनके साथ अपना घर जलवा सके। वह सिर से पैर तक मस्त-मौला थे। साथ सत्यान्वेषी होने के कारण ही वे असत्य, विषमता, आड़म्बर, पाखाण्ड, अंधाविश्वास, अनीति, आदि के विरुद्ध लडने वाले सच्चे सूरमा की भाँति उन्होंने थकना, हतोत्साही होना या पीछे हटना सीखा ही नहीं था। ऐसे योद्धा में अक्खडपन का होना स्वाभाविक ही है। वे जन्मजात अक्खड, मस्तमौला, फक्कड होने के कारण उन्हें किसी बात की चिन्ता नहीं थी।

5. <u>समाजसुधारक</u> :-

कबीर समाज सुधारक थे। उस काल में समाज आज कि तरह जातीय संकीर्णता से ग्रस्त और त्रास्त था । हिन्दु - मुस्लिम का प्रश्न हर जगह पर जमा हुआ था। साम्प्रदायिकता का खूब दौरदारा था। इन्सान को इन्सान का दुश्मन करार दिया था। मनुष्य खुद ही अविश्वासी हो गया था। विषामता की नीति व्यक्ति के मन को घेर रही थी। धर्म सिर चढ़कर बोल रहा था। हर व्यक्ति छोटा और तुच्छ हो गया था। ऐसे समाज में कबीर जी रहे थे, इसलिए वह समाज से क्रान्ति के स्तर पर विद्रोह कर उठे। कबीर ने जन-समाज पर होनेवाले शोषाण को समाप्त करने का प्रयास किया था, चाहे वह सामाजिक, धार्मिक, या आर्थिक हो। अपने काल के सब वर्गों के लोगों को सुधारने का बहुत ही बडा कार्य किया था। इसी कारण उन्हें समाज सुधारक भी कहा जाता है।

अत: कबीर के स्वभाव की इन्हीं विशेषाताओं के आधारपर डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी कबीर के बारे में ठ ठिक ही कहते हैं - " वे सिर से पैर तक मस्तमौला, स्वभाव से फक्कड, आदत से अक्खड, भक्त के सामने निरीह, भेषधारी के आगे प्रचंड, दिल के साफ, दिमाग के दुरुस्त, भीतर से कोमल, बाहर से कठोर, जन्म से अस्पृष्य, कर्म से वंदनीय थे। युगावतार की शक्ति और विश्वास लेकर वे पैदा हुए थे और युग प्रवर्तन कर सके।" (19)

इस तरह से हजार वर्ष के इतिहास में कबीर जैसा व्यक्तित्व लेकर कोई साहित्यकार निर्माण नहीं हुआ।

:- कबीर का कृतित्व -:

कबीर के नाम पर जो ग्रंथ मिलते हैं उनका कोई हिसाब नहीं है। उन्होंने मसि कागद छुआ नहीं था और न ही कलम पकडी थी। उनके अधिकांश कथन मौखिक ही हुआ करते थे और उनको लिखाना न लिखाना उनके शिष्यों का उत्तरदायित्व था। इस लिए यह निश्चित है कि कबीर ने स्वयं अपने हाथ से कोई ग्रंथ नहीं लिखा होगा। उन्होंने तो गाया है और गाकर जीवन - जगत की अन्यतम अनुभूतियों और विचार-शृंखलाओं को सहज ढंग से अभिव्यक्त किया है। कबीर का गाया हुआ जिन्होंने कंठस्थ किया है, या जिन ग्रथों में उनके गायन को स्थान मिला है, आज उसी का संग्रह किया गया है।

प्रामाणिक कृतियाँ :-

कबीर की प्रामाणिक कृतियाँ ढूँढना अत्यन्त कठिन कार्य है। उनके शिष्योंने जो कुछ लिपिबद्ध किया और कुछ लोगों ने जबानी याद रखा और उसका स्वरूप धीरे - धीरे बदलता रहा। कबीर पंथी सन्तों ने अपनी रचनाओं को भी कबीर के नाम पर प्रसारित किया। कबीर वाणी को कबीर पंथी वाङ् मय से अलग करना कोई सहज साध्य बात नहीं है। इसी कारण कबीर के ग्रंथों की संख्या 82 तक मानी जाती है। नागरी प्रचारिणी सभा ने 1955 ई. तक के खोज-विवरण के आधार पर वह संख्या 158 मानी हैं। डॉ. एफ. ई. के ने 'कबीर एण्ड हिज् फालोवर्स' ग्रंथ में इनकी संख्या 38 मानी है। मिश्रबन्धु कबीर के ग्रंथों की संख्या 75 से 84 तक मानते हैं।

श्री. विल्सन अपने 'रेलिजस सेक्ट्स आफ दी हिन्दुज' ग्रंथ में कबीर की सिर्फ आठ रचनाएँ मानते हैं -

1. " आनंद राम सागर

2. बलख की रमैनी
3. चौचरा
4. हिंडोला
5. झूलना
6. कबीर पंजी
7. कहरा
8. शब्दावली।" (20)

कबीर साहित्य पर अनुसंधान के बाद कई प्रामाणिक संस्करण करने के महत्वपूर्ण प्रयास किए गये हैं - जैसे -

1. " कबीर वचनावली (1916 ई.)
   सं. अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
2. कबीर ग्रंथावली (1928 ई.)
   सं. डॉ. बाबु श्यामसुन्दर दास,
3. संत कबीर (1943 ई.)
   सं. डॉ. रामकुमार वर्मा,
4. कबीर ग्रंथावली (सन 1961)
   सं. डॉ. पारसनाथ तिवारी,
5. कबीर ग्रंथावली (सन 1969 ई.)
   सं. डॉ. माताप्रसाद गुप्त ,
6. कबीर बीजक (सन 1971 ई.)
   सं. डॉ. शुकदेव सिंह,
7. रमैनी (सन 1974 ई.)
   सं. जयदेव सिंह, वासुदेव सिंह।" (21)

एक ओर खोज रिपोर्टों को आधार मानकर कबीर के नाम के साथ समस्त 'कबीर पंथी' साहित्य की गणना की जाती रही है और दूसरी ओर कबीर की प्रामाणिक रचनाओं के वैज्ञानिक संस्करण प्रस्तुत करने का भी प्रयत्न किया जा रहा है।

कबीर साहित्य में म कुछ-न-कुछ प्रक्षेप सभी परम्पराओं के पाठों

में हुआ है। प्रमुखतया राजस्थानी पाठ परम्परा, पंजाबी पाठ परम्परा तथा पूर्वी [अवधी] पाठ परम्परा पाई जाती है। राजस्थानी और पंजाबी परम्परा के पाठ इसलिए विश्वसनीय नहीं हैं कि दादू पंथी, निरंजन पंथी, नानक पंथी सन्तों ने उन्हें अपनी मान्यताओं की सीमा के अनुकूल बनाया है। पूर्वी परम्परा में साम्प्रदायिक आग्रह के कारण पौराणिक तत्वों का समावेश होता रहा है। और कबीर को अलौकिक महिमा से मण्डित किया गया है।

कबीर के अध्ययन के लिए हमें इन सभी ग्रंथो को सामने रखना होगा। लेकिन अधिकांश विद्वानों एवं शोधकर्ताओं ने डॉ. श्यामसुंदरदास द्वारा संपादित 'कबीर ग्रंथावली' को परिपूर्ण माना है। अत: हम भी उसी को आधार मानकर कबीर साहित्य का लेखाजोखा करेंगे।

<u>निष्कर्ष</u> :-

कबीर के जीवन के सम्बन्ध में हम इन निष्कर्षों पर पहुँच जाते हैं -

1. कबीर का जन्म विक्रम की 14 वीं शती के मध्य हुआ था और वे विक्रम की 15 वीं शती में विद्यमान थे।
2. कबीर का जन्म काशी में हुआ था और उनका अधिकांश जीवन काशी में गुजरा। काशी में उन्हें अनेक विरोधों का सामना करना पडा।
3. वे जाति के जुलाहा थे।
4. कबीर अध्यात्मिक साधना करते थे, फिरभी उन्होंने गृहस्थ जीवन का त्याग नहीं किया था।
5. उन्हें लम्बी आयु प्राप्त हुई थी।
6. कबीर मृत्यु से पहले 'काशी' छोडकर 'मगहर' गये, वहीं उनकी मृत्यु हुई।
7. उन पर नाथों की योग साधना और वैष्णव भक्ति दोनों के गहरे संस्कार हुए थे।
8. कबीर स्वभाव से श्रमजीवी, मानवतावादी, क्रान्तिकारी, फक्कड, समाजसुधारक थे।

-: संदर्भ सूची :-

संदर्भ क्रमांक	लेखक	रचना	प्रकाशक-काल	पृष्ठ
1.	डॉ. पारसनाथ तिवारी	कबीर-वाणी संग्रह	राका प्रकाशन, इलाहाबाद पंचम संस्करण, 1975 ई.	15
2.	डॉ. रामलाल वर्मा/ डॉ. रामचन्द्र वर्मा	युगपुरुष कबीर	भारतीय ग्रंथ निकेतन, दिल्ली - 6 प्रथम संस्करण 1978	27
3.	डॉ. रामलाल वर्मा/ डॉ. रामचन्द्र वर्मा	युगपुरुष कबीर	भारतीय ग्रंथ निकेतन, दिल्ली - 6 प्रथम संस्करण 1978	33
4.	सं. डॉ. श्यामसुंदरदास 'प्रस्तावना'	कबीर ग्रंथावली	नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, पंद्रहवाँ संस्करण, सं. 2041 वि.	18
5.	डॉ. रामचन्द्र तिवारी	कबीर मीमांसा	लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद- 1 प्रथम संस्करण 1976	27
6.	सं. डॉ. श्यामसुंदरदास ' प्रस्तावना '	कबीर ग्रंथावली	नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, पंद्रहवाँ संस्करण सं. 2041 वि.	14
7.	डॉ. गोविन्द त्रिगुणायत	कबीर की विचारधारा	साहित्य निकेतन, कानपुर- 1 तृतीय संस्करण श्रवणी सं. 2024	30
8.	डॉ. गोविन्द त्रिगुणायत	कबीर की विचारधारा	साहित्य निकेतन, कानपुर- 1 तृतीय संस्करण श्रवणी सं. 2024	32

संदर्भ क्रमांक	लेखक	रचना	प्रकाशक-काल	पृष्ठ
9.	डॉ. श्यामसुंदरदास ' प्रस्तावना'	कबीर ग्रंथावली	नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, पंद्रहवाँ संस्करण सं. 2041 वि.	14
10.	डॉ. पारसनाथ तिवारी	कबीर-वाणी संग्रह	राका प्रकाशन, इलाहाबाद-2 पंचम संस्करण 1975 ई.	34
11.	डॉ. रामलाल वर्मा/ डॉ. रामचन्द्र वर्मा	युगपुरुष कबीर	भारतीय ग्रंथ निकेतन, दिल्ली-6 प्रथम संस्करण 1978.	34/35
12.	डॉ. श्यामसुंदरदास 'प्रस्तावना'	कबीर ग्रंथावली	नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, पंद्रहवाँ संस्करण सं. 2041 वि.	18
13.	डॉ. शुकदेव सिंह लेख 'साखी'	कबीर बीजक	नीलाम प्रकाशन, प्रथम संस्करण 1972	163
14.	डॉ. रामलाल वर्मा/ डॉ. रामचन्द्र वर्मा	युगपुरुष कबीर	भारतीय ग्रंथ निकेतन, दिल्ली- 6 प्रथम संस्करण 1978	41
15.	डॉ. गोविन्द त्रिगुणायत	कबीर की विचारधारा	साहित्य निकेतन, कानपुर- 1 तृतीय संस्करण श्रवणी सं. 2024	46
16.	डॉ. पारसनाथ तिवारी	कबीर-वाणी संग्रह	राका प्रकाशन, इलाहाबाद- 2 पंचम संस्करण 1975 ई.	23

संदर्भ क्रमांक	लेखक	रचना	प्रकाशक-काल	पृष्ठ
17.	डॉ. राजेन्द्रमोहन भटनागर	कबीर	भारतीय ग्रंथ निकेतन, दरियागंज नई दिल्ली 1985	19
18.	डॉ. श्यामसुंदरदास ' साखी लेख '	कबीर ग्रंथावली	नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, पंद्रहवाँ संस्करण 2041 वि.	200
19.	आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी	कबीर	राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, पटना छटा संस्करण 1988	146
20.	डॉ. रामचन्द्र तिवारी	कबीर मीमांसा	लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद- 1 प्रथम संस्करण 1976	45
21.	डॉ. रामचन्द्र तिवारी	कबीर मीमांसा	लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद- 1 प्रथम संस्करण 1976	47